1 वर्णमाला

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस पाठ के अध्यापन से पूर्व शिक्षक वर्णमाला का एक चार्ट तैयार करें और छात्रों से पढ़वाएँ।
- इस पाठ का वाचन सी.डी. के माध्यम से भी करवाएँ।
- छात्रों को चार-चार के समूह में बैठाया जाएगा। प्रत्येक छात्र से एक-एक वर्ण पढ़वाएँ।
- इससे छात्रों में समूह में काम करने की योग्यता विकसित होगी और उनका मनोबल बढ़ेगा।
- छात्रों की श्रवण और वाचन शैली का विकास होगा।

❖ पाठ का सार

वर्णों के समूह को वर्णमाला कहते हैं। हिंदी के समान संस्कृत में भी दो प्रकार के वर्ण होते हैं– स्वर और व्यंजन। स्वर के तीन भेद होते हैं–

ह्रस्व, दीर्घ व संयुक्त कुल तेरह (13) स्वर होते हैं। लृ का प्रयोग केवल वैदिक संस्कृत में मिलता है। व्यंजनों की संख्या 33 हैं। जिनमें स्पर्श, अन्तःस्थ और उष्म व्यंजन आते हैं। संयुक्त व्यंजन क्ष्, त्र्, ज्ञ् और श्र् हैं।

अनुस्वार (—ं) तथा विसर्ग (:) अयोगवाह ध्वनियाँ कहलाती हैं। 'अ' के अलावा जब कोई स्वर व्यंजन के साथ जोड़ा जाता है तो वह मात्रा के रूप में दिखाया जाता है जैसे– क् + आ = का स्वर जुड़ने पर व्यंजन के हल चिह्न (्) का लोप हो जाता है, वर्णों के सार्थक मेल से शब्द बनते हैं। शब्द के अंत में जिस स्वर की ध्वनि आती है, शब्द उसी स्वर से अंत होने वाला कहलाता है।

शब्द में आए वर्णों को पृथक् करना 'वर्ण-विच्छेद' कहलाता है। जिन शब्दों के अंत में कोई स्वर नहीं होता, वे हलंत शब्द कहलाते हैं। जैसे– अर्थात्, पृथक् आदि।

अभ्यास-उत्तरमाला

1. (क) अ (ख) ब (ग) ब
2. (क) परिश्रमः (ख) कार्यम् (ग) विज्ञानम्
3. (क) म् + इ + त् + र् + अ + म्

   (ख) ग् + अ + ण् + ए + श् + अः

   (ग) भ् + आ + व् + अ + न् + आ
4. स्वर वर्णाः– इ, आ, ए, उ, ओ, ऋ

   व्यंजन वर्णाः – प्, ट्, ख्, ड्, म्, ध्, च्, फ्, क्, हे्

2 केन/कथम्

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस पाठ के अध्यापन से पूर्व शिक्षक उक्त दोनों शब्दों को दर्शाने वाला एक चार्ट तैयार करें और छात्रों से पढ़वाएँ।
- इस पाठ का वाचन सी.डी. के माध्यम से भी करवाएँ।
- छात्रों को चार-चार के समूह में बैठाया जाएगा। प्रत्येक छात्र से उक्त शब्दों का वाचन करवाएँ।
- इससे छात्रों में समूह में काम करने की योग्यता विकसित होगी और उनका मनोबल बढ़ेगा।
- छात्रों की श्रवण और वाचन शैली का विकास होगा।

❖ पाठ का सार

संस्कृत में 'किसके द्वारा', 'किससे' के लिए 'केन' शब्द का प्रयोग किया जाता है।

जैसे– पितामहः केन चलति?

'कैसे', 'किस प्रकार' के लिए 'कथम्' शब्द का प्रयोग किया जाता है।

जैसे– सः कथम् पठति?

जिस वस्तु या विधि से कोई कार्य किया जाता है उसमें तथा अंगों का विकार बताने वाले शब्द में तृतीया विभक्ति का प्रयोग किया जाता है। सह (साथ) शब्द के साथ वाले शब्द में भी तृतीया विभक्ति होती है।

अभ्यास-उत्तरमाला

1. (क) कलमेन (ख) मित्रेण (ग) घ्राणेन (घ) पादैः
2. (क) पादाभ्यां (ख) घ्राणेन (ग) ध्यानेन (घ) शनैः
3. (क) ताः पुष्पैः स्वागतं कुर्वन्ति। (ख) अश्वाः पादैः तीव्र धावन्ति।
   (ग) वयम् ध्यानेन पठन्ति। (घ) यूयम कन्दुकेन क्रीडथ।
4. (क) सा ध्यानेन लिखति। (ख) गजः पादै चलति।
   (ग) वयम् घ्राणेन जिघ्रामः। (घ) पिता पुत्रेण सह गच्छति।

3 कस्मै/ किमर्थम्

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस पाठ के अध्यापन से पूर्व शिक्षक उक्त दोनों शब्दों को दर्शाने वाला एक चार्ट तैयार करें और छात्रों से पढ़वाएँ।
- इस पाठ का वाचन सी.डी. के माध्यम से भी करवाएँ।
- छात्रों को चार-चार के समूह में बैठाया जाएगा। प्रत्येक छात्र से उक्त शब्दों का वाचन करवाएँ।
- इससे छात्रों में समूह में काम करने की योग्यता विकसित होगी और उनका मनोबल बढ़ेगा।
- छात्रों की श्रवण और वाचन शैली का विकास होगा।

❖ पाठ का सार

संस्कृत में 'किसके लिए', के लिए 'कस्मै' शब्द का प्रयोग किया जाता है।

जैसे– सा कस्मै दुग्धम् आनयति?

'किसलिए' के 'किमर्थम्' शब्द का प्रयोग किया जाता है।

जैसे– सा तत्र किमर्थम गच्छति?

जिसके लिए या 'जिस लिए' कोई कार्य किया जाता है, तो उसमें चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग होता है।

अभ्यास-उत्तरमाला

1. (क) भ्रमणाय (ख) स्नानाय (ग) पुत्राय (घ) पठनाय

2.

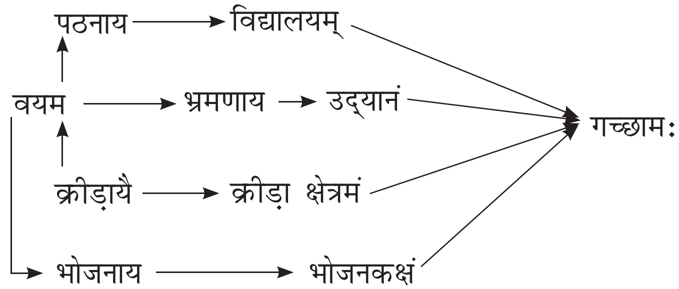

3.

प्रश्ना:	उत्तराणि
(क) मेघा	वर्षायै
(ख) सूर्य:	प्रकाशाय
(ग) विभा	भिक्षुकाय
(घ) माता	पुत्राय

4. (क) कस्मै नम:?

(ख) बालिका किमर्थम देवालयं गच्छति?

(ग) वृक्षा: किमर्थम् फलन्ति?

(घ) पिता कस्मै कन्दुकम आनयति?

5. (क) देवाय नम:।

(ख) माता पुत्राय दुग्धम् आनयति।

(ग) नृप निर्धनाय धनम् ददाति।

(घ) ते तरणाय गच्छन्ति।

4

कस्मात्/कुतः

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस पाठ के अध्यापन से पूर्व शिक्षक उक्त दोनों शब्दों को दर्शाने वाला एक चार्ट तैयार करें और छात्रों से पढ़वाएँ।
- इस पाठ का वाचन सी.डी. के माध्यम से भी करवाएँ।
- छात्रों को चार-चार के समूह में बैठाया जाएगा। प्रत्येक छात्र से उक्त शब्दों का वाचन करवाएँ।
- इससे छात्रों में समूह में काम करने की योग्यता विकसित होगी और उनका मनोबल बढ़ेगा।
- छात्रों की श्रवण और वाचन शैली का विकास होगा।

❖ पाठ का सार

संस्कृत में 'किससे' के लिए 'कस्मात' शब्द का प्रयोग होता है।

जैसे– बालकः कस्मात् बिभेति?

'कहाँ से' के लिए 'कुतः' शब्द का प्रयोग होता है।

जैसे– छात्रः कुतः आगच्छति?

अलग होने के अर्थ में 'से' का प्रयोग होने पर पंचमी विभक्ति का प्रयोग होता है।

अभ्यास-उत्तरमाला

1. (क) कूपात् (ख) पर्वतात् (ग) सिंहात् (घ) गृहात्
   (ङ) वृक्षात्
2. (क) अवतरति (ख) निर्गच्छति (ग) गच्छति (घ) आनयन्ति
3. (क) ते कन्दुकेन क्रीडन्ति।
   (ख) मालाकाराः उद्यानात् आगच्छतः।

(ग) कृषका: क्षेत्रात् आगच्छन्ति।

(घ) नर: कार्यालयं गच्छति।

4. (क) कन्या कूपात् जलम् आनयति। (ख) बालक: सिंहात बिभेति।

(ग) फलानि वृक्षात् पतन्ति। (घ) कृषका: क्षेत्रात् आगच्छन्ति।

5. (क) बालक: वानरात् बिभेति।

(ख) पितामह उद्यानात् आनयति।

(ग) माता पुत्राय कलम: ददाति।

(घ) छात्र: विद्यालयात् आगच्छति।

5 कस्य/तस्य

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस पाठ के अध्यापन से पूर्व शिक्षक उक्त दोनों शब्दों को दर्शाने वाला एक चार्ट तैयार करें और छात्रों से पढ़वाएँ।
- इस पाठ का वाचन सी.डी. के माध्यम से भी करवाएँ।
- छात्रों को चार-चार के समूह में बैठाया जाएगा। प्रत्येक छात्र से उक्त शब्दों का वाचन करवाएँ।
- इससे छात्रों में समूह में काम करने की योग्यता विकसित होगी और उनका मनोबल बढ़ेगा।
- छात्रों की श्रवण और वाचन शैली का विकास होगा।

❖ पाठ का सार

संस्कृत में 'किसका, किसकी, किसके' के लिए 'कस्य' शब्द का प्रयोग होता है।

जैसे– पितामह: कस्य कथां कथयति?

'उसका, उसकी, उसके लिए' के लिए 'तस्य' शब्द का प्रयोग होता है।

जैसे– मालाकार: तस्य रक्षां करोति।

संबंध बताने के लिए षष्ठी विभक्ति का प्रयोग होता है।

अभ्यास-उत्तरमाला

1. (क) मम (ख) दशरथस्य (ग) रामास्य (घ) त्वम्
(ङ) जनकस्य
2. (क) मम, तव (ख) (.................) (ग) कुत्र (घ) उद्यानस्य
(ङ) भ्रमणाय (च) उद्यानम्
3. (क) मित्रस्य (ख) रामस्य (ग) कस्य (घ) भारतस्य
(ङ) श्रीकृष्णस्य
4. (क) विद्यालयस्य प्रधानाचार्य आगच्छति।
(ख) विद्यालयस्य समीपे उद्यानं अस्ति।
(ग) अहम् तस्य गृहं गच्छति।
(घ) सः उद्यानस्य मालाकारः आसीत्।
(ङ) मम पुस्तक कुत्र अस्ति?

6 कस्मिन/कुत्र

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस पाठ के अध्यापन से पूर्व शिक्षक उक्त दोनों शब्दों को दर्शाने वाला एक चार्ट तैयार करें और छात्रों से पढ़वाएँ।
- इस पाठ का वाचन सी.डी. के माध्यम से भी करवाएँ।
- छात्रों को चार-चार के समूह में बैठाया जाएगा। प्रत्येक छात्र से उक्त शब्दों का वाचन करवाएँ।
- इससे छात्रों में समूह में काम करने की योग्यता विकसित होगी और उनका मनोबल बढ़ेगा।
- छात्रों की श्रवण और वाचन शैली का विकास होगा।

❖ पाठ का सार

संस्कृत में 'किसमें' के लिए 'कस्मिन' शब्द का प्रयोग होता है।

जैसे– तव गृहम् कस्मिन नगरे अस्ति?

'कहाँ पर' के लिए 'कुत्र' शब्द का प्रयोग होता है।

जैसे– त्वम् कुत्र पठसि?

'कहाँ', 'किसमें' और 'किस पर' के अर्थ में सप्तमी विभक्ति का प्रयोग किया ता/जा है।

अभ्यास-उत्तरमाला

1. (क) तरणताले (ख) क्षेत्रे (ग) विद्यालये (घ) उद्याने
   (ङ) वृक्षे
2. (क) विद्यालये (ख) नीड़े (ग) दिल्ली नगरे (घ) तरणताले
3.

(क) सिंहाः	तड़ागे
(ख) कृषकाः	वने
(ग) मीनाः	विद्यालये
(घ) छात्राः	वृक्षे
(ङ) खगाः	क्षेत्रे

4. (क) गर्जति (ख) गच्छति (ग) कुर्वन्ति (घ) तरन्ति
5. (क) त्वं गृहं कुत्र अस्ति्।
   (ख) मत्स्याः जले तरन्ति।
   (ग) उद्याने पुष्पाणि विकसन्ति।
   (घ) वने सिंहाः गर्जन्ति।

7 अकारान्त (पुल्लिंग) शब्दाः

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस पाठ के अध्यापन से पूर्व शिक्षक तीनों वचनों (एकवचन, द्विवचन और बहुवचन) का एक चार्ट तैयार करें।
- इस पाठ का वाचन सी.डी. के माध्यम से भी करवाएँ।
- छात्रों को चार-चार के समूह में बैठाया जाएगा। छात्र पुल्लिंग शब्दों से संबंधित चित्रों पशु-पक्षी को एकत्र करके संचयिका (एलबम) में लगाएँ।
- इससे छात्रों में समूह में काम करने की योग्यता विकसित होगी और उनका मनोबल बढ़ेगा।
- छात्रों की श्रवण और वाचन शैली का विकास होगा।

❖ पाठ का सार

'अ' स्वर से अंत होने वाले शब्द अकारांत कहलाते हैं जैसे– ब् + आ + ल् + अ + क् + अ = बालक।

जो शब्द पुरुष जाति का बोध कराते हैं, वे पुल्लिंग शब्द कहलाते हैं। संस्कृत में तीन वचन होते हैं। प्रायः शब्दों के पीछे जुड़े प्रत्ययों से वचनों का ज्ञान हो जाता है। जैसे– एकवचन का चिह्न (:) 'द्विवचन' का चिह्न (औ की मात्रा) और बहुवचन का चिह्न आ की मात्रा और विसर्ग (ा:) है।

अभ्यास-उत्तरमाला

1. (क) ब (ख) अ (ग) ब (घ) ब
2. एकवचनम् – बालकः, हस्तः, चिकित्सकः
   द्विवचनम् – शुकौ, सैनिकौ, मृगौ
   बहुवचनम् – सिंहाः, अश्वाः, पिकाः
3. (क) दो पेड़ (ख) बादल (ग) दो हाथ

(घ) बहुत से मोर (ङ) दो बंदर (च) बहुत से कुत्ते

4. 1. मृगः – हिरण 2. अश्वः – घोड़ा 3. खगः – पक्षी
4. मयूरः – मोर 5. शुकः – तोता 6. कपोतः – कबूतर

8 अकारान्त (स्त्रीलिंग) शब्दाः

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस पाठ के अध्यापन से पूर्व शिक्षक स्त्रीलिंग-पुल्लिग शब्दों का भेद दर्शाते हुए एक चार्ट तैयार करें, जिसमें तीनों वचनों के रूप हों।
- इस पाठ का वाचन सी.डी. के माध्यम से भी करवाएँ।
- छात्रों को चार-चार के समूह में बैठाया जाएगा। प्रत्येक समूह से स्त्रीलिंग-पुल्लिग शब्दों का वाचन करवाएँ।
- इससे छात्रों में समूह में काम करने की योग्यता विकसित होगी और उनका मनोबल बढ़ेगा।
- छात्रों की श्रवण और वाचन शैली का विकास होगा।

❖ पाठ का सार

'आ' से स्वरांत होने वाले शब्द 'आकारांत' कहलाते हैं। प्रायः ये शब्द स्त्रीलिंग होते हैं। जिन शब्दों से स्त्री जाति का बोध हो, वे स्त्रीलिंग शब्द होते हैं जैसे– म् + आ + ल् + आ = बालिका।

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
छात्रा	छात्रे	छात्राः
लता	लते	लताः

उपरोक्त आकारांत शब्दों के अंत में जुड़े प्रत्यय पुल्लिग प्रत्ययों से भिन्न हैं। एकवचन में कोई प्रत्यय (चिह्न) नहीं, द्विवचन में 'ए' की मात्रा (–े) और बहुवचन में विसर्ग (:) का चिह्न होता है।

अभ्यास-उत्तरमाला

1. (क) ब (ख) अ (ग) अ (घ) ब

2. 1. लता, लताः 2. चटके 3. नरः नरौ 4. मालाः
   5. देवौ देवाः

3. एकवचनम् – कलिका, नासिका, अम्बा
   द्विवचनम् – चटके, लते, गायिके
   बहुवचनम् – अजाः, मक्षिकाः, घटिकाः

4. शिक्षिका – अध्यापिका   माले – दो माला
   गायिका – गायिका   चटकाः – चार चिड़ियाँ
   अजा – बकरी   कोकिले – दो कोयल

9 नपुंसकलिंग शब्दाः

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस पाठ के अध्यापन से पूर्व शिक्षक तीनों लिंगों को दर्शाने वाला एक चार्ट तैयार करें और छात्रों से वाचन करवाएँ।
- इस पाठ का वाचन सी.डी. के माध्यम से भी करवाएँ।
- छात्रों को चार-चार के समूह में बैठाया जाएगा। प्रत्येक समूह से तीनों लिंगों के शब्द लिखवाएँ।
- इससे छात्रों में समूह में काम करने की योग्यता विकसित होगी और उनका मनोबल बढ़ेगा।
- छात्रों की श्रवण और वाचन शैली का विकास होगा।

❖ पाठ का सार

जिन शब्दों से स्त्री-पुरुष का भेद पता नहीं चलता, उन शब्दों को नपुंसकलिंग शब्द कहते हैं जैसे–

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
मित्रम्	मित्रे	मित्राणि:
फलम्	फले	फलानि
गृहम	गृहे	गृहाणि

उपरोक्त शब्दों के अंत में जुड़े प्रत्यय स्त्रीलिंग व पुल्लिग शब्दों के प्रत्ययों से अलग है।

एकवचन में 'म्'

द्विवचन में 'ए' की मात्रा (े)

बहुवचन में (आनि)

(किंतु आकारांत स्त्रीलिंग शब्द के द्विवचन में भी 'ए' की मात्रा लगती है।)

'ऋ' 'र', 'ष्' के बाद आने वाला 'न्' 'ण्' में बदल जाता है।

अभ्यास-उत्तरमाला

1. (क) ब (ख) अ (ग) ब
2. 1. कन्दुकम् कन्दुकानि 2. बालक: बालकौ
   3. माला माला: 4. मुखे मुखानि
   5. चक्रम् चक्रे
3. रूप्यकाणि मित्रे चक्रम्
   वायुयानम् गृहम् नक्षत्राणि
4. पुल्लिंग – शुक:, मेघ:, अश्वौ
   स्त्रीलिंग – नासिका, वर्षा, चटके
   नपुंसकलिंग – मुखम्, चित्रम्, पुस्तकानि।

10 सर्वनाम परिचयः

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस पाठ के अध्यापन से पूर्व शिक्षक 'एतद्' सर्वनाम के तीनों लिंगों से संबंधित चार्ट तैयार करें और छात्रों से इसका वाचन करवाएँ।
- इस पाठ का वाचन सी.डी. के माध्यम से भी करवाएँ।
- छात्रों को चार-चार के समूह में बैठाया जाएगा।
- इससे छात्रों में समूह में काम करने की योग्यता विकसित होगी और उनका मनोबल बढ़ेगा।
- छात्रों की श्रवण और वाचन शैली का विकास होगा।

❖ पाठ का सार

जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं, वे 'सर्वनाम शब्द' कहलाते हैं। ये तीनों लिंगों में होते हैं।

शब्दः	एकवचनम्	द्विवचनम्	बहुवचनम्
वह	सः/सा	तौ/ते	ते/ताः
यह	एषः/एषा	एतौ/एते	एते/एताः
तुम	त्वम्	युवाम्	यूयम्
मैं	अहम्	आवाम्	वयम्

'एते', 'ते', 'के' सर्वनामों के वचन की पहचान क्रिया के वचन द्वारा ही होती है।

अभ्यास-उत्तरमाला

1. (क) ब (ख) अ (ग) ब
2. (क) ते (ख) एते (ग) तौ (घ) वयम्:
   (ङ) एतत्

11 क्रिया (क)
(प्रथमपुरुषः)

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस पाठ के अध्यापन से पूर्व शिक्षक प्रतिदिन बोली जाने वाली क्रियाओं का चार्ट तैयार करें और छात्रों से इसका वाचन करवाएँ।
- इस पाठ का वाचन सी.डी. के माध्यम से भी करवाएँ।
- छात्रों को चार-चार के समूह में बैठाया जाएगा। प्रत्येक समूह के छात्र से क्रिया शब्द संस्कृत में सुनें।
- इससे छात्रों में समूह में काम करने की योग्यता विकसित होगी और उनका मनोबल बढ़ेगा।
- छात्रों की वाचन और श्रवण शैली का विकास होगा।

❖ पाठ का सार

जिन शब्दों से कार्य के करने या होने का पता चलता है, वे क्रिया शब्द कहलाते हैं। क्रिया को करने वाला 'कर्ता' कहलाता है।

जैसे– बालः– पठति (बालक– पढ़ता है।)
(कर्ता) (क्रिया)

क्रिया का मूल शब्द धातु कहलाता है। उसमें प्रत्यय जोड़कर तीनों वचनों के रूप बनते हैं।

जैसे– पठ् धातु
एकवचन में 'ति' प्रत्यय – पठति
द्विवचन में 'तः' प्रत्यय – पठतः
बहुवचन में 'अन्ति' प्रत्यय – पठन्ति

ये प्रत्यय केवल लट्लकार (वर्तमान काल), प्रथम पुरुष में प्रयुक्त होते हैं।

एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
स लिखति	तौ लिखतः	ते लिखन्ति
बालः नमति	बालौ नमतः	बालाः नमन्ति
सा हसति	ते हसतः	ताः हसन्ति

अभ्यास-उत्तरमाला

1. (क) ब (ख) ब (ग) अ (घ) ब
2. (क) (वे दो) जाते हैं (ख) (वे सब) बैठते हैं
   (ग) (वे सब) चलते हैं (घ) (वह) नमस्कार करता है
   (ङ) (वे दो) बोलते हैं
3. (क) पठन्ति (ख) खादति (ग) नमति (घ) धावति

12 क्रिया (ख)
(मध्यमः एवं उत्तमपुरुषः)

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस पाठ के अध्यापन से पूर्व शिक्षक दैनिक प्रयोग में आने वाली महत्वपूर्ण धातुओं का चार्ट तैयार करें और छात्रों से इसका वाचन करवाएँ।
- इस पाठ का वाचन सी.डी. के माध्यम से भी करवाएँ।
- छात्रों को चार-चार के समूह में बैठाया जाएगा।
- इससे छात्रों में समूह में काम करने की योग्यता विकसित होगी और उनका मनोबल बढ़ेगा।
- छात्रों की वाचन और श्रवण शैली का विकास होगा।

❖ पाठ का सार

संस्कृत भाषा में–

'वह' के लिए– प्रथम पुरुष (अन्य)
'तुम' के लिए– मध्यम पुरुष (श्रोता)
'मैं' के लिए – उत्तम पुरुष (वक्ता)

का प्रयोग होता है।

मध्यम और उत्तम पुरुष की क्रिया के प्रत्यय

	मध्यम पुरुष	उत्तम पुरुष
एकवचन	असि	आमि
द्विवचन	अथः	आवः
बहुवचन	अथ	आमः

उदाहरण– त्वम् लिखसि (मध्यम पुरुष)

अहम् लिखामि (उत्तम पुरुष)

अभ्यास-उत्तरमाला

1. (क) ब (ख) अ (ग) ब
2. (क) खाते हो (तुम दो) (ख) जाते हैं (हम सब)
   (ग) करते हो (तुम) (घ) घूमते हैं (हम दो)
   (ङ) देते हैं (हम सब)
3. प्रथम पुरुष – गच्छति लिखति चलन्ति
   मध्यम पुरुष – गच्छथः पठसि
   उत्तम पुरुष – हसामि खादामि भ्रमामः

13

कर्तृकारकम्
(प्रथमा विभक्तिः)

कः	कौ	के	→	पुं०
का	के	काः	→	स्त्री०
किम्	के	कानि	→	नपुं०

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस पाठ के अध्यापन से पूर्व शिक्षक कर्ता और क्रिया को दर्शाने वाला एक चार्ट तैयार करें और छात्रों से इसका वाचन करवाएँ।
- इस पाठ का वाचन सी.डी. द्वारा भी करवाएँ।
- छात्रों को चार-चार के समूह में बैठाया जाएगा।

- इससे छात्रों में समूह में काम करने की योग्यता विकसित होगी और उनका मनोबल बढ़ेगा।
- छात्रों की श्रवण और वाचन शैली का विकास होगा।

❖ पाठ का सार

वाक्य में कारक को व्यक्त करने वाले चिह्न या प्रत्यय 'कारक चिह्न' या विभक्ति प्रत्यय कहलाते हैं।

संस्कृत कारक और उनकी विभिक्तियाँ निम्नलिखित हैं–

कारक	कारक चिह्न	विभक्ति
कर्ता	ने	प्रथमा
कर्म	को	द्वितीया
करण	से, के द्वारा	तृतीया
संप्रदान	को, के लिए	चतुर्थी
अपादान	से (अलग होना)	पंचमी
संबंध	का, के की	षष्ठी
अधिकरण	में, पर	सप्तमी
संबोधन	हे, अरे	संबोधन

संस्कृत में संबंध और संबोधन को कारक नहीं मानते हैं क्योंकि इनका सीधा संबंध क्रिया के साथ नहीं होता है।

प्रातः कालः

अब प्रात:काल है।

सूर्य उदय होता है। पक्षी कूकते हैं।

लोग भ्रमण करते हैं। दो औरतें जाती हैं।

कमल खिलते हैं। बालक खेलते हैं।

छात्र पढ़ते हैं। अम्बा पकाती है।

किसान हल चलाते हैं।

अभ्यास-उत्तरमाला

1. (क) वे सब पक्षी (ख) वह किसान (ग) ये दो शेर

(घ) ये सब बालक (ङ) ये सब चक्र

2. (क) पुष्पाणि (ख) यूयम् (ग) आवाम् (घ) अहम्
(ङ) तौ (च) कृषकः (छ) वयम् (ज) सैनिकाः

3. (क) एषाः (ख) एषः (ग) एतानि (घ) एते

4. एकवचनम् – पत्रम्, लता, सैनिकः
द्विवचनम् – खगौ, बाले, कोकिले
बहुवचनम् – चक्राणि, मृगाः, अजाः

14 कर्मकारम् (द्वितीया विभक्तिः)

कम्	कौ	कान्	⟶	पुं०
काम्	के	काः	⟶	स्त्री०
किम्	के	कानि	⟶	नपुं०

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस पाठ के अध्यापन से पूर्व शिक्षक व्यावसायिक कार्य करने वाले लोगों का एक सचित्र चार्ट तैयार करें और प्रत्येक चित्र के नीचे उससे संबंधित संस्कृत में एक वाक्य लिखें।
- इस पाठ का वाचन सी.डी. के माध्यम से भी करवाएँ। शिक्षक संस्कृत में वाक्य बोलने का अभ्यास करवाएँ।
- छात्रों को चार-चार के समूह में बैठाया जाएगा।
- इससे छात्रों में समूह में काम करने की योग्यता विकसित होगी और उनका मनोबल बढ़ेगा।
- छात्रों की श्रवण और वाचन शैली का विकास होगा।

❖ पाठ का सार

जिस शब्द पर क्रिया का प्रभाव पड़ता है, उसे कर्म कहते हैं जैसे– रमा पुस्तकं पठति। (क्या पढ़ती है? पुस्तक। पुस्तक कर्म है)

संस्कृत में कर्म कारक के लिए द्वितीया विभक्ति का प्रयोग किया जाता है।

वार्तालाप

अनुपमा – तुम कहाँ जाती हो?

अनुराधा – मैं बाजार जाती हूँ।

अनुपमा – तुम वहाँ किसलिए जाती हो?

अनुराधा – मैं वहाँ से फल और मिठाई लाती हूँ। तुम कहाँ जाती हो?

अनुपमा – मैं विद्यालय जाती हूँ।

अनुराधा – तुम वहाँ क्या करती हो?

अनुपमा – मैं वहाँ पुस्तक पढ़ती हूँ, लेख लिखती हूँ और चित्र बनाती हूँ।

अभ्यास-उत्तरमाला

1. (क) चन्द्रम् (ख) मालाम् (ग) पत्रिकाम् (घ) ग्रामम्
   (ङ) चित्रम् (च) पत्राणि
2. (क) वृषौ (ख) देवालयम् (ग) बालकेन् (घ) देशम्
   (ङ) दुग्धं
3. 1. फले 2. पुस्तकम्, पुस्तकानि 3. लेखे, लेखानि 4. माला, मालानि
   5. लते, लताः
4. प्रथमा विभक्तिः – नरः, लेखः, सिंहः, महिला, अश्वाः
   द्वितिया विभक्तिः – लताम्, चित्रम्, ग्रामम्, खगान्, भोजनम्।

15 करणकारकम् (तृतीया विभक्तिः)

केन	काभ्याम्	कैः	⟶	पुं०
कया	काभ्याम्	काभिः	⟶	स्त्री०

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस पाठ के अध्यापन से पूर्व शिक्षक कारक के चार्ट द्वारा करण कारक के बारे में छात्रों को समझाएँ।
- इस पाठ का वाचन सी.डी. के माध्यम से करवाएँ।
- संस्कृत में वाक्य बोलने का अभ्यास करवाएँ।
- छात्रों को चार-चार के समूह में बैठाया जाएगा।
- इससे छात्रों में समूह में काम करने की योग्यता विकसित होगी और उनका मनोबल बढ़ेगा।
- छात्रों की श्रवण और वाचन शैली का विकास होगा।

❖ पाठ का सार

जिस साधन के द्वारा कार्य किया जाता है, वह 'करण कारक' कहलाता है। संस्कृत में करण कारक के लिए 'तृतीया विभक्ति' का प्रयोग किया जाता है। अंग विकार के सूचक शब्दों में भी 'तृतीया' विभक्ति का प्रयोग होता है।

मेरा परिचय

मैं ज्योति हूँ।

मैं प्रातः बाग में जाती हूँ।

दादा और दादी भी बाग में जाते हैं।

फूलों और पक्षियों से बाग की शोभा होती है।

वहाँ माली बैठता है।

माली फूलों से माला बनाता है।

शिक्षक फूलमाला ले जाता है।

आज बालदिवस है।

वे मित्रों के साथ विद्यालय जाते हैं।

हम दोनों तो पिता के साथ जाते हैं।

शिक्षक फूलमाला से अतिथि का स्वागत करता है।

अभ्यास-उत्तरमाला

1.	(क)	ब	(ख)	ब	(ग)	अ
2.	(क)	गेंद से	(ख)	लोगों के द्वारा		
	(ग)	पक्षियों से	(घ)	भिखारी को		
3.	(क)	क्रीडनकैः	(ख)	पादाभ्याम्	(ग)	मित्रेण
4.	(क)	पुष्पैः	(ख)	नेत्राभ्याम्	(ग)	मित्रेण

16 सम्प्रदानकारकम् (चतुर्थी विभक्तिः)

कस्मै	काभ्याम्	केभ्यः	⟶	पुं॰
कस्यै	काभ्याम्	काभ्यः	⟶	स्त्री॰

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस पाठ के अध्ययन से पहले शिक्षक छात्रों को सम्प्रदान कारक के बारे में समझाएँ।
- इस पाठ का सी.डी. के माध्यम से भी वाचन करवाएँ। संस्कृत में वाक्य बोलने का अभ्यास भी करवाएँ।
- कक्षा में छात्रों को चार-चार के समूह में बैठाया जाएगा।
- प्रत्येक समूह के छात्र से एक-एक वाक्य सुनें।
- इससे छात्रों में समूह में काम करने की योग्यता विकसित होगी और उनका मनोबल बढ़ेगा।
- छात्रों की श्रवण और वाचन शैली का विकास होगा।

❖ पाठ का सार

जिसके लिए कार्य किया जाता है या कुछ दिया जाता है, वह सम्प्रदान कारक कहलाता है। संस्कृत में सम्प्रदान कारक के लिए चतुर्थी विभक्ति का प्रयोग होता है।

देवालय

मैं पिता के साथ मंदिर जाता हूँ।
पुजारी लोगों को प्रसाद देता है।
मैं सबके लिए प्रार्थना करता हूँ।
धनी भिखारी को वस्त्र देता है।
कुछ लोग वानरों को चने देते हैं।
सब प्रसन्न होते हैं।

अभ्यास-उत्तरमाला

1. (क) अ (ख) अ (ग) ब (घ) ब (ङ) ब
2. (क) सर्वस्यै (ख) परोपकारेभ्यः (ग) भ्रमणाय (घ) याचकेभ्यः (ङ) ज्ञानाय
3. (क) बालकाय (ख) क्रीडनाय (ग) जनेभ्यः (घ) रमायै (ङ) प्रकाशाय
4. (क) आचार्याय (ख) पुष्पैः (ग) जनेभ्यः (घ) याचकेभ्यः (ङ) भोजनाय

17 अपादानकारकम्
(पञ्चमी विभक्तिः)

कस्मात्	काभ्याम्	केभ्यः	⟶	पुं०
कस्याः	काभ्याम्	काभ्यः	⟶	स्त्री०

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस पाठ के माध्यम से पूर्व शिक्षक अपादान कारक के बारे में छात्रों को समझाएँ।
- इस पाठ का सी.डी. के माध्यम से भी वाचन करवाएँ। संस्कृत में वाक्य बोलने का अभ्यास भी करवाएँ।
- कक्षा में छात्रों को चार-चार के समूह में बैठाया जाएगा।

- प्रत्येक समूह के छात्र से एक-एक वाक्य सुनें।
- इससे छात्रों में समूह में काम करने की योग्यता विकसित होगी और उनका मनोबल बढ़ेगा।
- इससे छात्रों की श्रवण और वाचन शैली का विकास होगा।

❖ पाठ का सार

किसी वस्तु से अलग होने या डरने के अर्थ में 'अपादान कारक' का प्रयोग होता है।

संस्कृत में अपादान कारक के लिए पञ्चमी विभक्ति का प्रयोग किया जाता है जैसे–

वृक्षात् फलं पतति।

वृक्ष से फल गिरते हैं।

(अपादान का चिह्न 'से' अलग होने के अर्थ में प्रयुक्त होता है, जबकि करण कारक में 'से', 'के द्वारा' अर्थ में प्रयुक्त होता है।)

आज रविवार है।

हम सब गेंद से खेलते हैं।

लोग घरों से बाग में जाते हैं।

एक बंदर पेड़ से उतरता हैं।

बालक बंदरों से डरते हैं।

मधुमक्खियाँ फूलों से रस ले जाती हैं।

माली बाग से फूल लाता है।

हम सब खेल के मैदान से घर जाते हैं।

अभ्यास-उत्तरमाला

1. (क) अ (ख) अ (ग) ब (घ) अ (ङ) ब
2. (क) अश्वात् (ख) विद्यालयात् (ग) आपणात् (घ) वृक्षात्
3. (क) उदयानात् (ख) उद्यानम् (ग) वृक्षात् (घ) वानरात्

4.	बालकाभ्याम्	बालकेभ्यः
	लतायाः	लताभ्यः
	मित्राभ्याम्	मित्रेभ्यः
	अश्वात्	अश्वाभ्याम्
	कस्मात्	केभ्यः
	कस्याः	काभ्याम् काभ्यः

18 सम्बन्धकारकम् (षष्ठी विभक्तिः)

कस्य	कयोः	केषाम्	⟶	पुं॰
कस्याः	कयोः	कासाम्	⟶	स्त्री॰

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस पाठ के अध्यापन से पूर्व शिक्षक संबंध कारक के बारे में छात्रों को समझाएँ।
- इस पाठ का सी.डी. के माध्यम से भी वाचन करवाएँ।
- कक्षा में छात्रों को चार-चार के समूह में बैठाया जाएगा। प्रत्येक समूह के
- छात्र से संस्कृत में एक-एक वाक्य सुनें।
- इससे छात्रों में समूह में काम करने की योग्यता विकसित होगी और उनका मनोबल बढ़ेगा।
- छात्रों की श्रवण और वाचन शैली का विकास होगा।

❖ पाठ का सार

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से संबंध का बोध हो, उसे संबंध कारक कहते हैं। संस्कृत में संबंध कारक के लिए षष्ठी विभक्ति का प्रयोग किया जाता है।

बाग की शोभा

मेरा घर बगीचे के पास है। यहाँ लोग समूह में घूमने के लिए आते हैं। वृक्षों के ऊपर हरे पत्ते हैं। पक्षियों का स्वर मन को हर लेता हैं बगीचे की सुंदरता फूलों

से होती है। भँवरे फूलों का रस पीते हैं। वहाँ कौआ और कोयल बैठते हैं। उन दोनों का रंग काला होता है। कौवे का स्वर कर्कश होता है और कोयल का मधुर होता है। यहाँ आकर मैं प्रसन्न होता हूँ।

अभ्यास-उत्तरमाला

1. (क) अ (ख) ब (ग) अ (घ) अ
   (ङ) ब
2. (क) गंगाया: (ख) भारतस्य (ग) काकस्य (घ) गृहस्य
   (ङ) दशरथस्य
3. (क) नृपस्य सेवक: आगच्छति।
   (ख) भारतस्य जना: वीरा: भवन्ति।
   (ग) विद्यालयस्य पुस्तकालय: विशाल: अस्ति।
   (घ) इदं विवेकस्य गृहम् अस्ति।
   (ङ) खगानां कूजनं मनोहरं भवति।
4.

1.	देवस्य	देवयो:	देवानाम्
2.	रमाया:	रमयो:	रमाणाम्
3.	खगस्य	खगयो:	खगानाम्
4.	पुष्पस्य	पुष्पयो:	पुष्पाणाम्
5.	नरस्य	नरयो:	नराणाम्

19 अधिकरणम् (सप्तमी विभक्ति:)

कस्मिन्	कयो:	केषु	→	पुं०
कस्याम्	कयो:	कासु	→	स्त्री०

❖ विचार-संदर्शिका (विचार-संकेतन)

- इस पाठ के अध्यापन से पूर्व शिक्षक संबंध कारक के बारे में छात्रों को समझाएँ।

- इस पाठ का सी.डी. के माध्यम से भी वाचन करवाएँ।
- कक्षा में छात्रों को चार-चार के समूह में बैठाया जाएगा।
- प्रत्येक समूह के छात्र से एक-एक वाक्य सुनें।
- इससे छात्रों में समूह में काम करने की योग्यता विकसित होगी और उनका मनोबल बढ़ेगा।
- छात्रों की श्रवण और वाचन शैली का विकास होगा।

❖ पाठ का सार

जिस स्थान पर कार्य 'पर' या 'में' में पूरा हो या जो कार्य करने का अथवा वस्तु का आधार हो, उस स्थान को बताने वाले शब्द-रूप को अधिकरण कारक कहते हैं। इस कारक में सप्तमी विभक्ति का प्रयोग होता है।

खेल का मैदान

मेरे विद्यालय में बड़ा खेल का मैदान है। छात्र खेल के मैदान में फुटबॉल खेलते हैं। वहाँ तालाब भी है। छात्र तालाब में तैरते हैं। वे तैराकी की प्रतियोगिता में जाते हैं। व्यायाम-शिक्षक छात्रों को नियमों के बारे में बताता है। खेलने में छात्रों की रुचि हैं।

अभ्यास-उत्तरमाला

1. (क) पञ्जरे (ख) पुष्पेषु (ग) वृक्षे
   (घ) कक्षायाम् (ङ) सरोवरे
2. (क) क्रीडाक्षेत्रे (ख) मीनाः (ग) आश्रमे (घ) न्यायाधीशः
3. (क) घटे (ख) तडागे (ग) पादपानाम्
   (घ) क्रीडाक्षेत्रे
4.

बालके	बालकयोः	बालकेषु
रमायाम्	रमयोः	रमासु
वृक्षे	वृक्षयोः	वृक्षेषु
लतायाम्	लतयोः	लतासु
पुष्पे	पुष्पयोः	पुष्पेषु
कक्षायाम्	कक्षयोः	कक्षासु